हदीस और उसकी इक़साम

84 0

बिस्मिल्लाहिर्ररहमानिर्रहीम

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत रहम वाला है।

सब तअरीफ़े अल्लाह तआला के लिए हैं। हम उसी का शुक्र अदा करते हैं और उसी से मदद और माफ़ी चाहते हैं।

अल्लाह की बेशुमार सलामती, रहमतें और बरकतें नाज़िल हों मुहम्मद सल्लल लाहु अलैहि व सल्लम पर और आपकी आल व औलाद और असहाब रज़ि. पर।

अम्मा बअद!

बहुत से मुसलमान हैं जिन्होंने हदीस का नाम तो सुना है मगर यह नहीं जानते कि हदीस कहते किसे हैं? सही, हसन, ज़ईफ़ और मौज़ूअ हदीस का मतलब क्या होता है? यही सब आम मुसलमान भी जानें। यह फ़ोल्डर इसी कोशिश की तरफ़ एक कदम है। अल्लाह तआला इसके ज़रिये आम मुसलमानों का फ़ायदा पहुंचाए। (आमीन)

हदीस का लग़वी मआनी

हदीस का लफ़्ज़ अरबी ज़ुबान में कई मआनों में इस्तेमाल होता है। जैसेः–

1.नई चीज़ और नई बात को हदीस कहा जाता है।

2. बात–चीत (गुफ़्तुगु) के मआनी में भी इसका इस्तेमाल होता है।

3.दुनिया के अजायबात और ख़िलाफ़े उम्मीद वाक़िआत की हिकायात और क़िस्सों को भी हदीस बोला जाता है।

4. नबी सल्ललल्लाहु अलैहि व सल्लम के कलाम व इरषादात को हदीस कहा जाता है।

5. नबी सल्ल. ने कुरआने मजीद को भी हदीस कहा बेषक। बेहतरीन हदीस अल्लाह की किताब है।'' **(बुख़ारी 7277 & मुस्लिम 1471)**

6. अल्लाह तआला ने भी कुरआने करीम को हदीस कहा है।

(सूरह अअराफ़–आयत–185 & कहफ़–आयत–06 & तूर–34 & वाक़िआ–81 & क़लम–44 और मुर्सिलात–50)

हदीस का इस्तेलाही मआनी

इसलामी इस्तेलाह में इल्में हदीस से मुराद वह इल्म है, जिसमें अल्लाह के रसूल सल्ल. के अक़वाल, (कथन) आमाल (कार्य) और अहवाल (हालात) ज़िक्र किये गये हों। हदीस की तीन क़िस्में हैं।

1. क़ौली हदीस 2. फ़ैअली हदीस 3. तक़रीरी हदीस

(1) कौली हदीसः– जिस हदीस में अल्लाह के रसूल सल्ल. के अक़वाल (कथन) का ज़िक्र किया गया हो, वह क़ौली हदीस कहलाती है।

जैसे– मालिक बिन हुवेरिस रज़ि. का बयान है कि अल्लाह के रसूल सल्ल. ने फ़रमाया ''सल्लु कमारआय तुमूनी उसल्ली'' यानि ''जैसे मुझे नमाज़ पढ़ता देखते हो, तुम उस तरह नमाज़ पढ़ो।''

(बुख़ारी–631 & दारमी–1293)

(2) फ़ैअली हदीसः– जिस हदीस में आप सल्ल. के अफ़आल (अअमाल)

का बयान हो, वह फ़ैअली हदीस कहलाती है। इसके दायरे में आप सल्ल. की पूरी अमली ज़िन्दगी आ जाती है। जैसे– "नौमान बिन बशीर रज़ि. बयान करते हैं "जब हम नमाज़ के लिए खड़े होते तो अल्लाह के रसूल सल्ल. हमारी सफ़े दुरूस्त करते और जब हम सीधे खड़े हो जाते तो फिर 'अल्लाहु अकबर' कहकर नमाज़ शुरू करते।" **(अबु दाऊद–665)**

(3) तक़रीरी हदीसः– सहाबी रज़ि. के किसी फ़ैअल (अमल) पर आप सल्ल. का ख़ामोश रहना मुहद्दिसीन की इस्तेलाह में 'तक़रीर' कहलाता है और सहाबी रज़ि. का वह अमल तक़रीरी हदीस। क़ैस बिन अम्र रज़ि. का बयान है कि नबी सल्ल. ने एक आदमी को सुबह की (फ़र्ज़) नमाज़ के बाद दो रकअतें पढ़ते देखा तो आप सल्ल. ने फरमाया "सुबह की नमाज़ तो दो रकअत है।" उस आदमी ने जवाब दिया– मैंने फ़र्ज़ नमाज़ से पहले की दो रकअतें नहीं पढ़ी थीं, लिहाज़ा वह अब पढ़ी हैं। आप सल्ल. यह जवाब सुन कर ख़ामोश हो गये।

(अबु दाऊद–1267 & इब्ने माजा–1154)

वज़ाहतः– किसी काम को देख कर आप सल्ल. के ख़ामोश रहने और उस पर एतेराज़ न करने का मतलब यह है कि वह (काम) जाइज़ और सही है।

हदीसे क़ुदसी

यह हदीस की एक ख़ास क़िस्म हैं।

हदीसे क़ुदसी और दूसरी अहासीस में ख़ास फ़र्क़ यह है कि इसमें "कालल लाहु तआला" यानि "अल्लाह तआला ने फ़रमाया" के अलफ़ाज़ होते हैं।

हदीस की तीनों क़िस्मों का एक ही दर्जा है और तीनों क़िस्में शरीयत में हुज्जत की हैसियत रखती हैं।

उसूले हदीसः– उन क़ानूनों को कहा जाता है जिनके ज़रिये सनद और मतन के हालात मालूम किये जाते हैं।

मुहद्दिसः– वह शख़्स जो इल्मे हदीस में महारत रखता हो, मुहद्दिस कहलाता है। इसकी जमाअ मुहद्दिसीन है।

हदीस व सुन्नत

शरई इस्तेलाह में सुन्नत आप सल्ल. के तरीक़े को कहते हैं। जिस तरह कुरआन अल्लाह की वहय है उसी तरह सुन्नत भी अल्लाह ही की तरफ़ से है। (यह वहय ख़फ़ी है।) इसलिए कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया "(नबी सल्ल.) अपनी तरफ़ से कोई बात बना कर नहीं बोलते। यह तो बस वह बात कहते हैं जो इनकी तरफ़ वहय की जाती है।"**(सूरह नज़्म–आयत–3–4)**

उसूले हदीस और फ़िक़्ह के उलेमा के नज़दीक हदीस और सुन्नत के अल्फ़ाज़ हम मआनी हैं। कुछ लोगों का यह कहना कि "सुन्नत से मुराद अल्लाह के रसूल सल्ल. का अमली (फ़ैअली) तरीक़ा है और हदीस से मुराद आप सल्ल. के अक़वाल (कथन) हैं।" बिल्कुल ग़लत है और इस फ़न से ना वाक़िफ़ होने की दलील हैं। (मक़ामें हदीस और असली अहले सुन्नत–सफ़ा–36)

हदीस की इक़साम

पहली क़िस्म

(1) सहत और ज़ौअफ़ के एतेबार से हदीस की तीन क़िस्में हैं।

(1) सही (2) हसन (3) ज़ईफ़

(1) सही:– वह हदीस जिसकी सनद रावी से लेकर रसूल सल्ल. तक जुड़ी हो। शुरू से आख़िर तक सनद का सिलसिला कहीं टूटा न हो। सब रावी जाने पहचाने और सच्चे हों। यह रिवायत किसी और सही हदीस से टकराती न हो। कोई ऐब भी उसमें न हो, सही हदीस कहलाती है।

(2) हसन:– यह सही और ज़ईफ़ के बीच होती है। जिस हदीस के रावी सही हदीस के रावियों के मुक़ाबले हाफ़िज़े में कमज़ोर हों, मगर बाक़ी शर्तें वही हों, ऐसी हदीस हसन कहलाती है।

(3) ज़ईफ़:– जिस हदीस में सही (हदीस) के औसाफ़ (गुण) न पाये जाएं, वह ज़ईफ़ कहलाती हैं। जैसे– सनद में कोई कमज़ोर हाफ़िज़े (याददाश्त) का रावी हो या रावी सच्चा न हो या बीच में सनद का सिलसिला टूट जाए या और कोई छुपी हुई कमी या ख़राबी हो।

दूसरी क़िस्म

रावियों की तअदाद के लिहाज़ से हदीस की चार क़िस्में हैं।

1. मुतवातर 2. मशहूर 3. अज़ीज़
4. ग़रीब या फ़र्द।

(1) मुतवातर:– जिसको रिवायत करने वाले हर ज़माने में इतने लोग हों कि उन का झूट पर जमाअ होना ना मुमकिन (सा) हो या आदतन मुहाल हो, मुतवातर कहलाती है।

(2) मशहूर:– जिसके रावी हर ज़माने में बकसरत (ज़्यादा) हों और किसी ज़माने में भी उन की तादाद तीन से कम न हो, मशहूर हदीस कहलाती है।

(3) अज़ीज़ :– जिस हदीस के रावी किसी ज़माने में भी दो से कम न हों, अज़ीज़ कहलाती है।

(4) ग़रीब या फ़र्द:– वह हदीस है जिसकी सनद के किसी मरहले में सिर्फ़ एक रावी रह जाए, ग़रीब कहलाती है। इसकी दो क़िस्में हैं।

(क) फ़र्दे मुतलक़:– जिसकी सनद में हर ज़माने में एक ही रावी हो।

(ख) फ़र्दे नसबी:– जिस की सनद के किसी एक मरहले में एक रावी रह जाए।

तीसरी क़िस्म

सनद के इतसाल व इनफ़िसाल के लिहाज़ से हदीस की कई क़िस्में हैं। जैसे–

(1) मुतसल:– उस हदीस को कहते हैं जिसकी सनद में कोई रावी झूटा न हो और न ही कोई रावी मजहूल अल हाल हो बल्कि हर रावी ने बराहे रास्त अपने शैख़ (उस्ताद) से (ख़ुद) सुना हो।

(2) मुन्क़तअ:– वह हदीस कहलाती है जिसके सिलसिलाए असनाद में से एक या एक से ज़्यादा रावी छूट गयें हों।

(3) मुरसल:– वह हदीस है जो मुतसल न हो बल्कि उस की सनद में सहाबी का नाम छूट जाए और ताबई नबी सल्ल. से हदीस रिवायत करे।

(4) मुअ़दल:– उस हदीस को कहते हैं जिसकी सनद में दो या दो से ज़्यादा रावी ग़ायब हों या किसी तबअ ताबई ने ताबई और सहाबी दोनों का नाम लिये बग़ैर रिवायत की हो।

(5) मुअल्लक़:– जिस हदीस में सनद के शुरू में कोई रावी छूट गया हो, मुअल्लक़ कहलाती है।

(6) मुदलसः— वह हदीस होती है जिसका रावी किसी ग़रज़ से अपने शैख़ के बजाए शैख़ के शैख़ से रिवायत करे और अपने षैख़ (उस्ताद) का नाम बयान न करें। ऐसे रावी को मुदल्लिस कहा जाता है।

चौथी क़िस्म

अक़वाले सहाबा रज़ि. और ताबईन रह. अल्लाह के रसूल सल्ल. तक पहुंचने के एतेबार से हदीस की ये क़िस्में हैं।

(1) मरफ़ूअः— वह हदीस होती है जिसकी सनद नबी सल्ल. तक पहुंचती हो।

(2) मौक़ूफ़ः— जब किसी सहाबी रज़ि. का क़ौल, फ़ैअल या तक़रीर का जिक्र हो तो उसे मौक़ूफ़ कहा जाता है।

(3) मक़तुअः— ताबई के क़ौल, फ़ैअल या तक़रीर को कहते हैं।

कुछ और क़ाबिले ज़िक्र इस्तेलाहाते हदीस

(1) मुसनदः— वह हदीस जो मरफ़ूअ हो और उसकी सनद में इतसाल हो, मुसनद कहलाती है।

(2) मुनकरः— वह हदीस होती है जिसकी सनद में कोई ऐसा रावी शामिल हो जो बहुत ज़्यादा ग़ल्तियां करने वाला, या गफ़लत और भूल—चूक का मरीज़ हो या उस से फ़स्क़ व फुजूर का ज़हूर होता हो। यानि ऐसी हदीस जो सही या हसन रिवायत के ख़िलाफ़ हो।

(3) मअरूफ़ः— वह हदीस है जो मुन्कर की ज़िद (उलट) हो यानि जो सही या हसन रिवायत के ख़िलाफ़ न हो।

(4) शाज़ः— जिस के रावी सच्चे हों लेकिन ऐसी हदीस की मुख़ालिफ़ हो। जिसके रावी बहुत ज़्यादा सच्चे (सक़्क़ा) हों। सक़्क़ातर (बहुत ज़्यादा सच्चे) रावियों की हदीस **महफ़ूज़** कहलाती है।

(5) मुअललः— वह हदीस जो बज़ाहिर सही नज़र आती है। लेकिन उसमें ऐसी कोई कमी या बुराई मौजूद हो, जिसे एक माहिरे फ़न ही जान सकता है।

(6) मुदरज अल असनादः— वह हदीस है जिस के सिलसिलाए असनाद में इज़ाफ़ा कर दिया गया हो।

(7) मुदरज अल मतनः— वह हदीस जिस के मतन में इज़ाफ़ा कर दिया गया हो।

(8) मुज़तरबः— जब दो सनदों में से एक में रावी ज़्यादा हों और तरजीह क़ायम न हो सके तो ऐसी हदीस मुज़तरब कहलाती है।

(9) मक़लूबः— वह हदीस है जिसकी सनद या मतन में तक़दीम या ताख़ीर वाक़ेअ हुई हो।

(10) मुहरफ़ः— वह कहलाती है जिसके अलफ़ाज़ में कहीं हुरूफ़ का फ़र्क़ आ जाए। जैसे अबु हुरैरा की जगह अबु बकर या कुछ और कर दिया जाए।

(11) मुसहफ़ः— जिसके अलफ़ाज की शक्ल वही रहे और किसी जगह नुक़्ते बदल जाएं जैसे सुआद को ज़ुआद या रे को ज़े कर दिया जाए।

(12) मक़बूलः— वह हदीस है जिसको अइम्मा ए हदीस ने जांच परख कर क़ाबिले हुज्जत क़रार दिया हो और उस पर अमल करना ज़रूरी हो।

(13) मरदूदः— वह हदीस जिसे महुद्दिसीन ने रद्द कर दिया हो।

(14) मौज़ूअः— मौज़ूअ से मुराद वह रिवायत है जिसे गढ़ कर नबी सल्ल.

की तरफ़ मन्सूब कर दिया गया हो। इस झूटी रिवायत पर 'हदीस' का इतलाक़ नहीं होता क्योंकि हदीस नबी सल्ल. के क़ौल, फ़ैअल या तक़रीर को कहते हैं।

(15) बातिलः— जिस रिवायत का कोई सुबूत न हो।

(16) बे असलः— जिस रिवायत की सनद न हो।

सही हदीस के दर्जात

(1) सब से बेहतर और ऊंचे दर्जे की हदीस वह है जो 'सहा सित्ता' (बुख़ारी, मुस्लिम, अबुदाऊद, नसाई, तिर्मिज़ी और इब्ने माज़ा) की सब किताबों में मौजूद हों।

(2) जिसे बुख़ारी और मुस्लिम दोनों ने रिवायत किया हो। ऐसी हदीस "मुत्तफ़िक़ अलैह" कहलाती है।

(3) जिसे सिर्फ़ बुख़ारी ने रिवायत किया हो।

(4) जिसे सिर्फ़ मुस्लिम ने रिवायत किया हो।

(5) जिसे बुख़ारी और मुस्लिम की शर्तों के मुताबिक़ किसी दूसरे मुहद्दिस ने रिवायत किया हो।

(6) जिसे सिर्फ़ बुख़ारी की शर्तों पर किसी दूसरे मुहद्दिस ने रिवायत किया हो।

(7) जिसे मुस्लिम की शर्तों पर किसी दूसरे मुहद्दिस ने रिवायत किया हो।

(8) जिसे बुख़ारी और मुस्लिम के अलावा बक़िया सहा सित्ता वालों ने सही समझा हो।

(9) जिसे सहा सित्ता के अलावा दूसरे मुहद्दिसीन ने सही कहा हो।

बुख़ारी व मुस्लिम का अहादीस में मक़ाम

मुहद्दिसीन का उसूल है कि जो रिवायत क़ुरआने हकीम और सुन्नते रसूल सल्ल. के खिलाफ़ हो, वह क़ौले रसूल सल्ल. नहीं हो सकती। इमाम बुख़ारी व मुस्लिम और दूसरे अइम्मा ए हदीस ने 'उसूले हदीस' की रू से जिन अहादीसे मुबारेका को सही कहा है, यक़ीनन वोह क़ुरआन व सुन्नत के मुताबिक़ हैं। सही बुख़ारी व मुस्लिम में सिर्फ़ सही हदीसें दर्ज की गईं हैं। उनमें कोई ऐसी रिवायत नहीं जो किताब व सुन्नत के ख़िलाफ़ हो।

(1) हाफ़िज़ इब्ने हजर असक़लानी रह. कहते हैं कि "इमाम बुख़ारी रह. ने ऐसी सही अहादीस का मजमूआ मुरत्तब करने का इरादा किया जिन की सेहत के बारे में किसी दयानतदार आदमी को शक न हो। यह इरादा उन्होंने अपने उस्ताद इसहाक़ बिन राहूया की ख़्वाहिश पर किया।" **(मुक़दमा—फ़त्हुल बारी)**

(2) इमाम नसाई रह. का बयान है "हदीस की तमाम किताबों में से बेहतरीन किताब सही बुख़ारी है और इस बात पर उम्मत का इज्माअ है कि ये दोनों किताबें (बुख़ारी व मुस्लिम) सही हैं और उन पर अमल करना वाजिब है।" **(मुक़दमा—सही बुख़ारी)**

(3) मशहूर मुहद्दिस हाफ़िज़ इब्ने सलाह कहते हैं "बुख़ारी व मुस्लिम की तमाम अहादीस क़तई अल सेहत हैं। इसलिए कि उम्मत ने उन में से हर एक को क़ुबूलियत का मक़ाम बख़्शा है।" **(मुक़दमा—इब्नुल सलाह)**

(4) हाफ़िज़ इब्ने कसीर रह. का बयान है "मैं इस बाब में इब्ने सलाह की ताईद करता हूँ। इस सिलसिले में उन्होंने जो कुछ कहा, वह सही है।"

(इख़्तेसार उलूम अल हदीस–इब्ने कसीर)

(5) इमाम इब्ने तीमिया रह. का क़ौल है ''अहादीस के वोह मजमूए जिन को उम्मत ने कुबूलियत का मुक़ाम अता किया है। उन की अहादीस के क़तई अल सेहत होने का फ़तवा अइम्मा ए दीन की कई जमाअतों से साबित है। तमाम अहलुल हदीस सलफ़ का आम तौर पर यही मज़हब है।'' **(इख़्तेसार उलूम अल हदीस–इब्ने कसीर)**

(6) शाह वलीउल्लाह रह. फ़रमाते हैं ''सहीहैन (बुख़ारी व मुस्लिम) की सारी की सारी रिवायात मुतसला, मरफ़ूआ पर मुहद्दिसीन का इज्माअ है। वोह इस बात पर सहमत हैं कि वोह सब अहादीस सही हैं। जो शख़्स उन की इस अहमियत को गिराना चाहता है। वह **बिदअती** है और ग़ैर मोमिनीन के रास्ते पर चलने वाला है।''**(हुज्जतुल लाहि बालिग़ा)**

(7) सय्यद अनवर शाह देवबन्दी रह. लिखते हैं ''हाफ़िज़ इब्ने हजर, अल्लामा सुर्खुसी, शैख़ुल इस्लाम इब्ने तीमिया और इमाम इब्ने सलाह व गैरहुम मुहक़्क़िक़ीन की जमाअत की यह तहक़ीक़ है कि 'सही हैन' (बुख़ारी व मुस्लिम) की हदीसें सब सही हैं और मेरी राय में भी उनका फ़ैसला ही सही है।'' **(मुक़दमा–फ़ैजुल बारी)**

(8) मुहद्दिसे मिस्र अल्लामा अहमद शाकिर लिखते हैं ''मुहक़्क़िक़ीन इल्में हदीस और असहाबे बसीरत के नज़दीक बुख़ारी और मुस्लिम की सब हदीसें सही हैं और उनमें कोई ज़ौअफ़ या कमज़ोरी नहीं।''

(हाशिया–अल बाइस अल हसीस)

(9) अल्लामा नासिरूद्दीन अल्बानी और शैख़ इब्नें बाज़ रह. की भी यही राय है कि बुख़ारी व मुस्लिम की सारी अहादीस सही हैं। उनमें कोई ज़ईफ़ हदीस नहीं और इस बात पर उम्मत का इज्माअ है।''

(मक़ामें हदीस और असली अहले सुन्नत)

(10) इमाम सुयुती रह. अपने रिसाले **''मुफ्ताह अल जन्नः फ़ी अल एहतेजाज बिल सुन्नाः''** में लिखते हैं ''अल्लाह तुम लोगों पर रहम करे। तुम्हें मालूम होना चाहिये कि मअरूफ़ उसूल की शर्तें पूरी करने वाली हदीस के हुज्जत होने का इन्कारी शख़्स न सिर्फ़ यह कि काफ़िर है और दायराए इस्लाम से ख़ारिज है बल्कि क़यामत के रोज़ उस का हश्र यहूद व नसारा के साथ होगा।'' **(वजूह अल अमल बि सुन्नतिर्रसूल–इब्ने बाज़)**

यह था हदीस, उसकी इक़साम और हैसियत का मुख़्तसर तआरुफ़। अल्लाह तआला से दुआ है कि वह इस पम्फ़लेट के ज़रिये हमारे कम इल्म हज़रात को फ़ायेदा पहुंचाए। हमारी ख़ताओं से दर गुज़र करे और हमें अपने दीन की सीधी राह पर चलाए।

आमीन!

अगर आप हमारी इस काविश से सहमत हैं तो हमारे साथ तआवुन करें ताकि ये पम्फ़लेटस ज़्यादा से ज़्यादा लोगों तक पहुंच सकें।

शुक्रिया।

आपका दीनी भाई
मुहम्मद सईद
मों. 09214836639 / 9887239649